विश्व धर्म

(Universal Religion)

वर्तमान संसार में विश्व धर्म की भी कल्पना की गयी है। यह कल्पना कहाँ तक सफल है, इस पर हम आगे विचार करेंगे। यहाँ इतना ही कहना चाहेंगे कि विभिन्न व्यक्तियों का सामूहिक धर्म जातीय धर्म है, विभिन्न जातियों का सामूहिक

Scanned by TapScanner

धर्म राष्ट्रीय धर्म है और विभिन्न राष्ट्रों का सामूहिक धर्म विश्व धर्म कहलाता है। यह वर्तमान सभ्यता के विकास का फल है। सबसे पहले मनुष्य अकेला था। उसके बाद एक धर्म के मानने वाले संगठित हुए, विभिन्न जातियाँ संगठित हुईं तो विभिन्न राष्ट्र भी संगठित हुए। यहाँ एक आवश्यक प्रश्न है कि विश्व-धर्म क्या है? सभी लोगों का एक धर्म तो हो नहीं सकता या एक धर्म होने पर सभी धर्मों का विनाश भी नहीं हो सकता, परन्तु विभिन्न धार्मिक मान्यताओं में समान तत्त्वों का अनुभव किया जा सकता है। इसे मानवीय धर्म या विश्व-धर्म कह सकते हैं, क्योंकि यह मनुष्य मात्र का धर्म है। जब मनुष्य भौगोलिक परिस्थितियों को प्राप्त कर मानव मात्र की धार्मिक समस्याओं पर विचार करता है तभी मानवीय या विश्व-धर्म का जन्म होता है। इसे सार्वभौम धर्म भी कहा जाता है; क्योंकि यह सभी देशों या राष्ट्रों का धर्म है। उदाहरणार्थ न्याय, दया, क्षमा, सहानुभूति आदि मानवता के लिए नैतिक तथा धार्मिक आदर्श हैं। मानव सृष्टि का मुकुट है। धर्म, संस्कृति आदि का केन्द्र मानव ही है। अतः मानवता की पूजा अनिवार्य है।

विश्व-धर्म की व्याख्या दो प्रकार से की जाती है। पहली व्याख्या के अनुसार ईश्वर मनुष्य रूप में धरती पर अवतरित होता है। इसे ही अवतारवाद कहते हैं। अवतारवाद के अनुसार निराकार साकार बन जाता है। अवतारवाद का मुख्य उद्देश्य मानव को ईश्वरीय मार्ग का प्रदर्शन करना है। ईश्वर मनुष्य को धर्म और सत्कर्म का मार्ग दिखलाता है। ईश्वर मनुष्य रूप में जन्म लेता है, परन्तु उसमें ईश्वरीय गुण रहते हैं। उदाहरणार्थ, प्रभु ईसा मसीह का जन्म मनुष्य रूप में हुआ परन्तु उनमें ईश्वर का गुण था। वस्तुतः परम पिता परमात्मा ने प्रभु ईसा मसीह के रूप में अवतार ग्रहण किया। उनका उद्देश्य लोगों को सन्मार्ग पर चलाना था। भारतीय परम्परा में अवतारवाद को विशेष महत्त्व दिया गया है। यहाँ अब तक दस अवतार हो चुके हैं जिसे दशावतार कहते हैं। ईश्वर नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, एक, अज, अद्वैत, निर्गुण, निराकार होते हुए भी मत्स्य, कच्छप, वाराह, नरसिंह, वामन आदि रूपों में सगुण और साकार हो जाता है। निर्गुण ब्रह्म के सगुण होने पर वह पुरुषोत्तम, वासुदेव शब्दों से कहा जाता है। गीता में भगवान् स्वयं कहते हैं कि मैं अजन्मा और अविनाशी रूप होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन कर अपनी योग माया से प्रकट होता हूँ।[१] जब धर्म की ग्लानि तथा अधर्म का अभ्युत्थान होता है तब मैं साकार रूप में प्रकट होता हूँ। शरीरधारी होकर मैं साधुओं की रक्षा तथा पापियों का विनाश करता हूँ। इस प्रकार प्रत्येक युग में मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार

Scanned by TapScanner

ग्रहण करता हूँ।[1] बौद्ध धर्म में भी प्रकारान्तर से अवतार का वर्णन है। महायान बौद्ध आचार्यों का कहना है कि तथागत गर्भ से बुद्ध का अवतार होता है। बौद्ध आचार्यों का विश्वास है कि शाक्यमुनि अन्तिम बुद्ध थे। पिछले जन्मों में उन्होंने पारमिता या पूर्णता का अभ्यास किया था। उनके पहले तेईस बुद्धों ने इस धर्म का प्रचार किया था। बौद्ध धर्म में ईश्वर के तीन काय माने गये हैं, जिसे त्रिकाय कहते हैं—धर्म काय, सम्भोग काय और निर्वाण काय। ईसाई धर्म में पिता, पुत्र और पवित्र प्रेत के रूप में ईश्वर की अभिव्यक्ति की गयी है। इससे स्पष्ट है किसी न किसी प्रकार से अवतारवाद विभिन्न धर्मों में स्वीकार किया गया है।

अवतारवाद की दूसरी व्याख्या के अनुसार मनुष्य ही ईश्वर बन जाता है। अर्थात् मनुष्य दैवीय गुणों से विभूषित होकर ईश्वर रूप में पूजा जाता है। उदाहरण के लिए, वे हीनयान के अनुसार बुद्ध साधारण मनुष्य के समान जन्म लेकर बोधि प्राप्त कर ईश्वर हो गये। ईसा-पूर्व आठवीं शताब्दी से लेकर छठवीं शताब्दी तक अनेक महात्माओं का जन्म हुआ जो पहले मनुष्य थे, परन्तु बाद में ईश्वर सिद्ध हो गये। उदाहरणार्थ, पारसी धर्म के संस्थापक महात्मा जरथुस्त्र, बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध, जैन धर्म के संस्थापक महावीर तथा चीन के महात्मा कन्फ्यूसियस आदि। इन महात्माओं ने अपने-अपने देश में परम्परागत धर्म, पुरोहितवाद तथा अन्ध-विश्वास का घोर विरोध किया। इनके ज्ञान तथा तपस्या के कारण ये ईश्वर हो गये। महात्मा बुद्ध ने वेद और ईश्वर की निन्दा की तथा कालक्रम से उनकी वाणी वेद हो गयी और वे दशम अवतार हो गये। अतः उनकी प्रतिष्ठा ईश्वर रूप में की गयी है। इसी प्रकार महात्मा महावीर ने भी साधारण मनुष्य के समान जन्म ग्रहण किया परन्तु असाधारण तपस्या के बल पर ईश्वर के समान पूज्य हो गये। इस प्रकार इन सभी महात्माओं ने विश्व को नयी दिशा प्रदान की।

विश्व-धर्म के उदाहरण के सम्बन्ध में बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वान हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म को विश्व-धर्म मानते हैं और कुछ लोग ईसाई, इस्लाम और बौद्ध धर्म को विश्व-धर्म मानते हैं। बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों का प्रारम्भ किसी जाति विशेष अथवा किसी राष्ट्र विशेष से अवश्य होता है, परन्तु इनका वर्तमान स्वरूप किसी राष्ट्र या देश तक सीमित नहीं। संसार के अनेक देश इन धर्मों को स्वीकार करते हैं। अतः भौगोलिक दृष्टि से हम किसी देश में इनकी उत्पत्ति बतला सकते हैं

---

१. यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति

परन्तु इन धर्मों का प्रचार और प्रसार तो विश्व-व्यापी है। वस्तुतः विश्व-धर्म वही है जिसमें विश्व की मानवता के लिए सन्देश हो, जिसमें समानता, भ्रातृत्व तथा न्याय-प्रियता आदि मानवता के गुण हों। जिसमें धनी और निर्धन, उत्तम और निम्न में भेद हो वह विश्व-धर्म नहीं कहला सकता। इस दृष्टि से हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि सभी विश्व-धर्म हैं, क्योंकि इनमें मानवता के कल्याण पर बल दिया गया है।

Scanned by TapScanner

प्रारम्भिक धर्म तथा प्राकृतिक धर्म के अध्ययन से यह बात हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाती है कि दोनों धर्मों का विकास अज्ञानता तथा असभ्यता के आधार पर हुआ है। प्रारम्भिक धर्म जैसा कि कुछ विद्वानों का मत है, जंगलियों तथा असभ्य लोगों का धर्म है और इस कारण यह हमारी धार्मिक चेतना की माँग को वास्तविक रूप से पूरा करने में असमर्थ है। यहाँ जादू की प्रधानता है। इसी प्रकार प्राकृतिक धर्म भी अविकसित कहा जा सकता है, क्योंकि यह हमें वैसा ईश्वर नहीं दे पाता, जो हमारी धार्मिक भावनाओं के लिए आवश्यक है, तथा जिसपर मानवजाति निर्भरता की भावना रख सके।

Scanned by TapScanner

अतः इन दोनो धर्मों में कोई भी धर्म का वास्तविक रूप हमारे समक्ष नहीं रखता। लोगों ने इनकी कड़ी आलोचना की, इसका फल यह हुआ कि ये दोनो धर्म धीरे-धीरे समाप्त हो गए। मानवीय मस्तिष्क के विकास के साथ ही धर्म के स्वरूप में भी विकास हुआ और धर्म अधिक परिपक्व तथा धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण हुआ।

ज्यों-ज्यों बुद्धि का विकास होता गया, लोगों ने मूल्यों (values) की प्रधानता की ओर ध्यान दिया तथा मानवीय गुणों की महत्ता स्वीकार की। प्राकृतिक धर्म के बाद हमारे समक्ष जो दूसरा विकसित तथा परिपक्व रूप आता है वह मानवीय धर्म है। अतः अब मानवीय धर्म की व्याख्या प्रस्तुत की जायगी।

मानवीय धर्म किसे कहते हैं? जैसा कि इसके शब्द से ही स्पष्ट है—यह कहा जा सकता है कि यह धर्म मानवता की पूजा पर बल देता है। अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मानवीय धर्म मानवीय गुणों अर्थात् मानवता को पूजा का विषय मानता है तथा ईश्वर का स्थान देता है।

मानव में कुछ ऐसे गुण हैं, जिनके कारण ही हम उसे विश्व के सभी प्राणियों से श्रेष्ठ मानते हैं। और इसी कारण जहाँ प्रारम्भिक धर्मों में निम्नकोटि के जीवों, जैसे—कौवा, कंगारु, छिपकिली की पूजा होती थी तथा प्राकृतिक धर्म में प्रकृति की वस्तुओं एवं घटनाओं को पूजा का विषय माना गया, वहाँ मानवीय धर्म मानवता को पूजा का एकमात्र विषय मानता है। मानव में प्रेम, क्षमा, करुणा, दया, कृपा, नैतिकता सहानुभूति त्याग आदि ऐसे गुण हैं, जिनके कारण ही लोगों ने मानवता की पूजा की।

पूजा आवश्यक रूप से 'आदर्श' की होनी चाहिए। यदि हम किसी भी वस्तु की पूजा करते हैं तो हम उसे धर्म की संज्ञा नहीं दे सकते। वह धर्म कहा जाय इसके लिए यह आवश्यक है कि वहाँ किसी ऐसी वस्तु को परम मानी जाय जो 'आदर्श' हो। मानवीय धर्म इसी कारण एक विकसित धर्म कहा जायगा क्योंकि इसमें मानवता अर्थात् एक आदर्श की पूजा की जाती है।

मानवीय धर्म में ईश्वर मानव का रूप धारण कर हमारे समक्ष आता है। हम उस व्यक्ति की पूजा करते हैं जो ईश्वर का एक प्रतिनिधि कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए हम ईसामसीह को ले सकते हैं। ईसाई धर्म के ईश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान ईसामसीह में लोगों को हुआ। इसके साथ ही कुछ लोगों के मतानुसार मानवीय धर्म में हम किसी पैगम्बर (Prophet) की पूजा करते हैं जो हमारे जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग बताता है। बुद्ध को लोगों ने ईश्वर के रूप में स्वीकार किया है, इसका कारण यह है कि बुद्ध ने मानव को उसके चरम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग बताया।

अतः मानवीय धर्म एक ऐसा धर्म है जिसमें हम ईश्वर के रूप में मानवता को स्वीकार करते हैं। मानवता से परे दूसरी कोई श्रेष्ठ सत्ता नहीं, यह सर्वोपरि तथा

Scanned by TapScanner

सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। यही कारण है कि मानवता को ही महात्मा गाँधी ने भी सभी वस्तुओं से ऊपर माना है। महात्मा गाँधी के अनुसार 'सत्य' ही 'ईश्वर' है। हम जानते हैं कि सत्य एक अत्यन्त ही श्रेष्ठ मानवीय गुण है। यदि सत्य ही ईश्वर है और हम सत्य की पूजा करते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम ईश्वर की पूजा करते हैं।

Scanned by TapScanner

मानवीय धर्म के मुख्य उदाहरण

(Important examples of Humanistic Religion)

मानवीय धर्म का सिंहावलोकन करने पर हम पाते हैं कि इसके माननेवाले केवल भारत में ही नहीं, बल्कि सारे विश्व में फैले हैं। भारत, ग्रीस तथा यूरोप आदि जगहों में मानवीय धर्म को प्राथमिकता दी गयी है। मानवीय धर्म के मुख्य उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) बौद्ध-धर्म
(ii) टैगोर का मानववाद
(iii) कामटे का प्रत्यक्षवाद
(iv) हेलेनिज्म

(i) बौद्ध धर्म

बुद्ध ने मानवीय धर्म को प्रधानता दी है। सर्वप्रथम बुद्ध ने ही भारत एवं विदेशों में मानवता को अन्य सभी वस्तुओं से ऊपर बताया। बुद्ध ने अपने जीवनकाल में पाया कि व्यक्ति अनेक रूढ़िवादी परम्पराओं में विश्वास करता है और उन्हें धर्म के लिए आवश्यक कहता है। इसके साथ ही अंधविश्वासों का भी चारो ओर साम्राज्य था।

बुद्ध ने सामाजिक प्रथाओं एवं अंधविश्वासों का कड़ा विरोध करते हुए पूजा-पाठ आदि का खण्डन किया। प्रारम्भिक धर्म में लोग बलि-प्रथा आदि को मानते थे। इनके अतिरिक्त भी धर्म के नाम पर अनेक ऐसे काम किये जाते थे, जिन्हें बुद्ध ने बुरा बताया और जिनका उन्होंने कड़ा विरोध किया।

बौद्ध धर्म हमारे समक्ष मानवता का संदेश देता है। बुद्ध के अनुसार मानव धर्म के बन्धन में इस प्रकार बँध गया है कि उसके कारण वह अनेक अनैतिक तथा असामाजिक कार्य करता है। इसी कारण से बुद्ध ने ईश्वर तथा दूसरे तत्त्वशास्त्र-संबंधी प्रश्नों पर अधिक ध्यान न देकर आचार-दर्शन को ही जीवन तथा धर्म के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति तत्त्वशास्त्र के प्रश्नों में उलझा रहता है वह अपने को सांसारिक तथा नैतिक कर्मों से बचाना चाहता है। क्योंकि बुद्ध के अनुसार मानव यदि समाज-सेवा में लगा हो, यदि वह मानवता का आदर करता हो, तो वह वास्तविक

Scanned by TapScanner

रूप से धार्मिक कहा जा सकता है। दूससे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानवता की पूजा ही बौद्ध धर्म का मुख्य उद्देश्य है।

जाति-पाँति, ऊँच-नीच, गरीबी-अमीरी आदि सामाजिक बुराइयों का बुद्ध ने बड़े जोरदार शब्दों में खण्डन किया है। उनके अनुसार मानव, मानव है; चाहे वह किसी जाति का क्यों न हो? इस विचार का समर्थन डॉ० राधाकृष्णन् ने भी किया है। इनके अनुसार भी व्यक्ति बड़ा या छोटा अपने कर्मों से होता है, साथ ही ब्राह्मण या शूद्र भी जन्म से नहीं अपने कर्मों के कारण कहा जाता है। बुद्ध ने भी यही शिक्षा दी दी है। उन्होंने बताया कि हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी जाति या वंश का हो, मानव है; उसमें किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं। वही महान है जो मानवता की कद्र करता है।

ब्राह्मणों ने धर्म के अन्तर्गत एक ऐसा आडम्बर रख दिया था, जिसका बुद्ध ने बड़ा ही जोरदार खण्डन किया है। धर्म के नाम पर अनेक जीवों की हत्या की जाती थी। बुद्ध इस विचार के कट्टर विरोधी थे और इसलिए बलिप्रथा का उन्होंने पूर्णतः खंडन किया है। बौद्ध धर्म अहिंसा में विश्वास करता है। महात्मा गाँधी बौद्धधर्म की इस विशेषता का हृदय से आदर करते थे। अहिंसा महात्मा गाँधी के अनुसार परम धर्म है। यों तो अहिंसा को सभी धर्मों में प्रधानता दी गई है परन्तु बुद्ध ने इसे अत्यन्त ही महत्त्व प्रदान किया है।

बौद्धधर्म के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस धर्म में तत्त्वशास्त्र को अत्यन्त ही न्यून स्थान दिया गया है। स्वयं बुद्ध का जीवन इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन में कभी भी तत्त्वशास्त्र को आवश्यक नहीं माना, बल्कि मानव सेवा ही परम धर्म है—ऐसा उनका मत था। इस तरह से बुद्ध ने मानवसेवा को ही प्राथमिकता देकर उसे धर्म का रूप दिया है और इसी कारण बौद्ध-धर्म मानवीय धर्म कहा जाता है।

बुद्ध का मानवीय धर्म, अनेक धर्मों से प्रशंसनीय होते हुए भी, कुछ त्रुटियों से अछूता नहीं कहा जा सकता। धर्म के लिए एक ईश्वर का होना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा कोई भी धर्म केवल सिद्धान्तमात्र रह जाता है। वह धर्म का सही रूप नहीं ले पाता क्योंकि वह धार्मिक चेतना की एक आवश्यक माँग को पूरा नहीं करता है। और, बौद्ध धर्म में ईश्वर का पूर्ण अभाव है, अतः यह इस धर्म की एक त्रुटि कही जा सकती है, यद्यपि अब ऐसी बात नहीं। इसका कारण यह है कि आज स्वयं बुद्ध को ही लोगों ने ईश्वर का स्थान प्रदान किया है और उन्हें ही पूजा और आराधना का विषय मान लिया है। परन्तु बुद्ध के जीवन काल में बौद्धधर्म में ईश्वर का पूर्ण अभाव था।

Scanned by TapScanner

(ii) टैगोर का मानववाद

भारत में मानवीय धर्म का एक रूप टैगोर के धर्म में देखने को मिलता है। इनके अनुसार मानवता से ऊपर दूसरी किसी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं। मानवता सर्वोपरि है, यह ईश्वर से भी ऊपर है। जो व्यक्ति मानवता की पूजा करता है, केवल वही धार्मिक व्यक्ति कहा जाने का दावा कर सकता है। टैगोर के अनुसार ईश्वर के जितने गुण हैं वे सभी मानव में वर्तमान हैं, जैसे—दया, क्षमा, प्रेम आदि सभी गुण मानव में भी उसी प्रकार वर्तमान हैं, जिस प्रकार की कल्पना हम ईश्वर में करते हैं। अतः यदि ये गुण वास्तव में मानव में हैं तो मानवता को ही पूजा का विषय माना जायगा। मानवता इस दृष्टिकोण से ईश्वर से किसी भी अर्थ में न्यून नहीं कही जा सकती।

टैगोर के अनुसार व्यक्ति को अपना जीवन दूसरों की सेवा में भेंट कर देना चाहिए। सेवा चाहे वह जिस रूप में हो, महान् है। अतः हम पाते हैं कि बुद्ध की तरह टैगोर ने भी मानवीय धर्म को अपनाया है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि वे प्रकृति अथवा ईश्वर की महत्ता नहीं मानते। ईश्वर और प्रकृति को उन्होंने स्वीकार किया है, इसकी चर्चा भी उन्होंने अपने साहित्य में की है। परन्तु पूजा के विषय के रूप में उन्होंने मानवता को ही सबसे महान् माना है। अतः टैगोर का धर्म भी मानवीय धर्म का एक उदाहरण है।

(iii) कामटे का प्रत्यक्षवाद

आरम्भ में ही हमने कहा है कि मानवीय धर्म का विकास न केवल भारत में ही हुआ है, बल्कि विदेशों में भी इसके कुछ उदाहरण देखने को मिलते हैं। यूरोप में मानवीय धर्म को प्राथमिकता देने का श्रेय कामटे (Comte) का है।

कामटे के मानवीय धर्म को प्रत्यक्षवाद भी कहा जाता है। प्रत्यक्ष जैसा कि हम जानते हैं, उसे कहा जाता है, जो हमारे समक्ष हो अर्थात् जिसका ज्ञान हमें सहज ही इन्द्रियों के माध्यम से होता है। कामटे के मानवीय धर्म को प्रत्यक्षवाद इसलिए कहा जाता है, क्योंकि मानवता प्रत्यक्ष है। कामटे धर्म में विश्वास करते हैं तथा विज्ञान की सार्थकता में भी विश्वास करते हैं, परन्तु उससे भी अधिक इनकी दृष्टि में मानवता का महत्त्व है।

कामटे मानवसमूह की पूजा का सन्देश देते हैं। मानब अनेक गुणों से विभूषित है, जैसे—दया, क्षमा, सहानुभूति, प्रेम, श्रद्धा, आदि। इन गुणों के कारण मानव अपने को ईश्वर के समीप कर देता है। ईश्वर और मानव में समानता आ जाती है। ईश्वर का हर गुण उसमें व्यक्त है। केवल उन गुणों के वाह्य-प्रदर्शन की आवश्यकता है। मानवीय गुणों में दो गुण—दया और क्षमा नारीत्व-गुण कहे जा सकते हैं। इन गुणों को हम नारी में व्यक्त पाते हैं और इसी कारण कामटे के अनुसार नारीत्व की पूजा मानवीय पूजा का एक मुख्य अंग है।

Scanned by TapScanner

कामटे तथा टैगोर के मानवीय धर्म में एक विभिन्नता देखने को मिलती है। टैगोर ने व्यक्तिविशेष को पूजा का विषय माना था। इनके अनुसार जिस व्यक्तिविशेष में हमें मानवीय गुणों का प्रदर्शन हो वह पूजा का विषय कहा जा सकता है। परन्तु कामटे का मत इससे भिन्न है। इनके मतानुसार मानवीय धर्म मानवता की पूजा है। अर्थात् मानवीय धर्म में हम किसी एक व्यक्तिविशेष की आराधना नहीं करते बल्कि मानवसमूह अर्थात् मानवता की आराधना करते हैं। फिर भी हम कह सकते हैं कि टैगोर तथा कामटे दोनों ही एकमात्र मानवीय धर्म के ही समर्थक हैं।

(iv) हेलेनिज्म

मानवीय धर्म का विकास ग्रीस में भी हुआ। ग्रीस के लोग आरम्भ में धर्मों में अनेक अन्धविश्वासों को पाल रहे थे। पर बाद में जब मानसिक विकास हुआ तो लोगों ने उन अन्धविश्वासों को दूर करना चाहा, और इस प्रयत्न ने ही एक नये धर्म को जन्म दिया जो आज हेलेनिज्म (Hellenism) के नाम से पुकारा जाता है।

हेलेनिज्म मुख्यत: ग्रीकों का एक ऐसा धर्म है, जिसे लोगों ने प्रधानत: अन्ध-विश्वासों को दूर करने के लिए लाया; साथ ही जो 'मानव' को पूजा का सन्देश देता है। दूसरे शब्दों में हेलेनिज्म मानवीय धर्म का एक रूप है, जिसे ग्रीस के लोग मानते हैं। अन्य मानवीय धर्मों के अनुसार ही हेलेनिज्म ने मानवता को सर्वोपरि महत्त्व प्रदान किया और इसे ही पूजा का विषय माना है। आरम्भ में लोग प्रेत (spirit) की पूजा करते थे, परन्तु ग्रीस-निवासियों ने उसे बाद में अस्वीकार किया। लोगों ने यह समझा कि प्रेत की अपेक्षा मानव में हम उन गुणों को अधिक मात्रा में पाते हैं, जिन्हें ईश्वर का आवश्यक गुण कहा जाता है। और इस प्रकार प्रेत-पूजा का स्थान महान् व्यक्तियों की आराधना (Hero-worship) ने ले लिया।

हमलोगों ने टैगोर तथा कामटे के मानवीय धर्म में पाया कि वहाँ चाहे व्यक्तिविशेष या व्यक्तिसमूह की पूजा होती है, परन्तु वैसी बात हेलेनिज्म में नहीं मिलती। बल्कि यहाँ हेलेन (Hellen) को पूजा का विषय माना गया है। हेलेन मानवता का प्रतिनिधित्व करता है। और इसी कारण इस धर्म को हेलेनिज्म कहा जाता है।

पर जब हम ध्यान देते हैं तो हेलेनिज्म की कुछ त्रुटियाँ हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाती हैं। सर्वप्रथम हमने यह पाया है कि हेलेनिज्म का आगमन धर्म के रूप में तभी हुआ, जब लोगों ने सामाजिक तथा धार्मिक अन्धविश्वासों को दूर करना चाहा था। अर्थात् सामाजिक बुराइयों के दूर करने के प्रयास में हेलेनिज्म आता है। पर यह उद्देश्य असफल सिद्ध होता है। वे सभी बुराईयाँ, जो धर्म तथा समाज में वर्तमान थीं, हेलेनिज्म में भी देखने को मिलती हैं।

Scanned by TapScanner